खण्ड-7, अंक-1, वर्ष-2019, मु0प्र0 1-4
D.O.I.: 10.22445/avsp.v7i1.1

शोध पत्र

स्नातक स्तर पर विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में गणित विषय के चयन और अध्ययन आदतों पर पारिवारिक सम्बन्धों द्वारा प्राप्त स्वीकृति एवं अस्वीकृति के प्रभावों का अध्ययन

राजीव कुमार सिंह[1] एवं भूपाल सिंह[2]
[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गणित विभाग, [2]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग
पी0बी0 पी0जी0 कॉलेज, प्रतापगढ़ सिटी–230002, उ0प्र0, भारत
dr.rajeevthakur2012@gmail.com

प्राप्त तिथि–16.07.2019, स्वीकृत तिथि–20.10.2019

सार– शिक्षा सम्पूर्ण जगत के उत्थान और पतन का सबलतम् कारक है। इतना ही नहीं आवश्यकता एवं आकांक्षा की पूर्ति का शक्तिशाली उपकरण भी शिक्षा ही है। शैक्षिक चरण में स्नातक स्तर बालक को मानवीय संसाधन के रूप में तैयार करने का अन्तिम उपादान है। प्रस्तुत शोध अध्ययन, बालक को मानवीय संसाधन के रूप में परिवर्तित होने की दिशा में प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन है जिसमें विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में विषय के चयन और अध्ययन आदत पर उनके पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन किया गया है, और यह जानने की कोशिश की गयी है कि विद्यार्थियों के द्वारा चयन किये गये गणित विषय और उसकी अध्ययन आदत पर परिवार की स्वीकृति और अस्वीकृति अपना प्रभाव डालती है।

बीज शब्द– पारिवारिक सम्बन्ध, अध्ययन आदत, विषय चयन, स्वीकृति व अस्वीकृत

A study of impact of family relationship's acceptance and non-acceptance on selection and study habits of math subject of science graduate level student

Rajeev Kumar Singh[1] and Bhupal Singh[2]
[1]Assistant Professor, Department of Mathematics, [2]Assistant Professor, Department of B.Ed.
P.B. P.G. College, Pratapgarh City-230002, UP, India
dr.rajeevthakur2012@gmail.com

Abstract- Education is most effective sources of uplift or collapse of whole world. It is also main powerful weapons to complete all need and aspiration. The present study reveals on, these problems which faced by new admitted science level graduate student and impact of family relationship on choice and study habits of math subjects. It is also shows that acceptance and non-acceptance of family to choice and study habits of that student who are studied math subject in graduation level family relationship effectively impacted to choices and study habits of science students.

Key words- Family relationship, study habits, selection of subject, acceptance and non-acceptance

1. **परिचय–** शिक्षा किसी राष्ट्र के विकास का शक्तिशाली उपकरण है, शिक्षा रूपी सीढी पर आरूढ़ होकर ही मानव अपने गंतव्य पर पहुँच सकता है। मानव विकास का सम्पूर्ण ढाँचा शिक्षा से ही होकर गुजरता है। शिक्षा के स्तरों में स्नातक उच्च शिक्षा का प्रवेश द्वार है, जहाँ से मानव को सेवार्थ तैयार कर मानवीय कौशलता का परिचायक बनाया जाता है। विज्ञान स्नातक वर्ग में विद्यार्थियों के विषय चयन पर दुविधा का साया सदैव विद्यमान रहता है। कभी वह स्वयं अनिश्चय की स्थिति में रहता है कि कौन–कौन से विषयों का चयन उसके लिए उचित रहेगा या फिर वह परिवार की अपेक्षाओं के अनुरूप विषय चयनित कर अध्ययन प्रारम्भ कर देता है। किसी भी शोध कार्य के लिए सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन शोध सम्बन्धी उद्देश्यों की निश्चितता के साथ पूर्ण करने में आवश्यक कदम माना जाता है। भावी शोध की रूपरेखा बहुत हद तक सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन पर निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध के कुछ महत्वपूर्ण अध्ययन जिसमें संजय शर्मा[1] ने माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं गणितीय निष्पत्ति में कोचिंग संख्याओं के प्रभावों का अध्ययन नामक शीर्षक पर अध्ययन कर पाया कि कोचिंग पढ़ने वालों छात्र–छात्राओं की अध्ययन आदतें, कोचिंग न पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं से उच्च स्तर की पायी गयी। जबकि कोचिंग पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं के अध्ययन आदतों पर पारिवारिक सम्बन्धों का प्रभाव सार्थक पाया गया। इसी प्रकार प्रेम कुमार वर्मा[2] ने राजकीय अनुदानित एवं निजी विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं उनकी निष्पत्ति पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन' नामक शीर्षक से अध्ययन कर पाया कि राजकीय एवं अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर पाया गया तथा विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों का शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव में भी सार्थक अन्तर पाया गया।[1–7]

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतापगढ़ जनपद के दो महाविद्यालय यथा, प्रताप बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय तथा मुनीश्वर दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय के विज्ञान स्नातक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों के गणित विषय के चयन तथा उनके अध्ययन आदतों पर उनके पारिवारिक सम्बन्धों की स्वीकृति एवं अस्वीकृति के प्रभावों का अध्ययन है। गणित विषय के चयन तथा उसकी निष्पत्ति और अध्ययन आदतों पर पारिवारिक सम्बन्ध का प्रभाव अनुमानतः व व्यवहारिक रूप से अधिक पाया जाता है। अगर विद्यार्थियों के चयन में परिवार की स्वीकृति रहती है तो परिवार हर सम्भव सहयोग प्रदान करता है। वहीं अस्वीकृति रहने पर परिवार से आपेक्षित सहयोग की प्राप्ति नहीं हो पाती है।

2. **अध्ययन का प्रयोजन**– प्रस्तुत शोध अध्ययन जिन प्रयोजनों के आधार पर आलम्बित है वे निम्नलिखित हैं–

2.1 विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के गणित विषय के चयन पर पारिवारिक सम्बन्धों द्वारा प्राप्त स्वीकृति एवं अस्वीकृति के प्रभावों का अध्ययन।
2.2 विज्ञान स्नातक स्तर के गणित विषय के विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों पर पारिवारिक सम्बन्धों द्वारा मात्र स्वीकृति एवं अस्वीकृति के प्रभावों का अध्ययन।

3. **परिकल्पना**– प्रस्तुत अध्ययन में निम्नांकित परिकल्पना कल्पित की गयी है–

3.1 विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के गणित विषय चयन पर पारिवारिक सम्बन्धों द्वारा प्राप्त स्वीकृति एवं अस्वीकृति के प्रभावों में सार्थक अन्तर नहीं है।
3.2 विज्ञान स्नातक स्तर के गणित विषय के विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों पर पारिवारिक सम्बन्धों द्वारा स्वीकृति एवं अस्वीकृति के प्रभावों में सार्थक अन्तर नहीं है।

4. **शोध प्रविधि**– प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षणात्मक प्रविधि को प्रयोगार्थ लाया गया है। जिसमें निम्न क्रियायें आहूत की गयी हैं–

4.1 **जनसंख्या एवं प्रतिदर्श**– प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रतापगढ़ जनपद के दो महाविद्यालयों प्रताप बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय तथा पं0 मुनीश्वर दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय के विज्ञान वर्ग के गणित विषय में अध्ययनरत 75–75 छात्रों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

4.2 **पारिवारिक स्वीकृति एवं अस्वीकृति श्रेणी का चयन**– प्रचलित मानव समाज में जन्म या विवाह के आधार पर परिवार और उनके सदस्यों के बीच सम्बन्धों की उत्पति होती है। परिवार में पति–पत्नी और बच्चों के बीच आपसी सम्बन्धों को पारवारिक सम्बन्ध कहा जाता है। माता–पिता तथा बच्चों के बीच वह सम्बन्ध जिसमें माता–पिता अपने बच्चों की इच्छाओं, रूचियों तथा बातों को अधिकतम स्वीकार कर तत्परता के साथ पूरा करने की कोशिश करते हैं, और बच्चों की समस्याओं को दूर करने का भरसक प्रयास करते हैं; इसे पारिवारिक स्वीकृति कहा जाता है। दूसरे माता–पिता और बच्चों के बीच वह सम्बन्ध जिसमें माता–पिता बच्चों के प्रति उपेक्षा भाव रखकर उनकी जायज और नाजायज माँगों को अस्वीकार कर उनकी इच्छाओं का दमन करते हैं; ऐसे सम्बन्ध पारिवारिक अस्वीकृति की श्रेणी में आता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में चयनित कक्षाओं के छात्र–छात्राओं से मौखिक वार्ता कर पारिवारिक स्वीकृति एवं अस्वीकृति श्रेणियों का विभाजन किया गया है।

5. **उपकरण एवं क्रिया विधि**– प्रस्तुत अध्ययन के छात्रों के विषय चयन के, अध्ययन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली तथा अध्ययन आदतों के अध्ययन के लिए बी0वी0 पटेल[4] द्वारा निर्मित अध्ययन आदत अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

6. **सांख्यिकीय प्रविधि**– प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों को वर्गीकृत एवं विश्लेषित कर परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु क्रान्तिक अनुपात मान का अनुप्रयोग किया गया है।

7. **आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या**– प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों को व्यवस्थित ढंग से प्रदर्शित करने तथा उसके परिणामों की सार्थकता अवलोकित करने के लिए निम्नांकित तालिकाओं से सहयोग लिया गया है–

सारिणी–1

गणित विषय के चयन में पारिवारिक सम्बन्धों द्वारा प्राप्त स्वीकृति एवं अस्वीकृति के प्रभाव की सार्थकता का अध्ययन

शोधचर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	माध्य अन्तर	क्रान्तिक अनुपात मान
स्वीकृति, प्राप्त विद्यार्थी	75	24.13	6.08	1.180	4.45	3.771
अस्वीकृति, प्राप्त विद्यार्थी	75	19.68	8.22			

df= 148 के 0.01 सार्थकता स्तर मान = 2.61 तथा 0.05 सार्थकता स्तर मान = 1.98 पर सार्थक

8. **विश्लेषण एवं व्याख्या–** प्रस्तुत अध्ययन में परिवार द्वारा स्वीकृति प्राप्त एवं अस्वीकृति प्राप्त विद्यार्थियों के गणित विषय के चयन पर प्रभाव के अध्ययन में **सारिणी–1** के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि परिवार द्वारा स्वीकृति प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के विषय चयन के प्रभाव का मध्यमान 24.13 तथा मानक विचलन 6.08 प्राप्त हुआ जबकि परिवार द्वारा अस्वीकृति प्राप्त विद्यार्थियों विषयी चयन के प्रभाव का मध्यमान 19.68 तथा मानक विचलन 8.22 प्राप्त हुआ है। दोनों वर्गों के मध्यमान मानों का विश्लेषण करने पर मध्यमान मानों की मानक त्रुटि 1.180 तथा माध्य अन्तर 4.45 प्राप्त हुआ। जिसके आधार पर क्रान्तिक अनुपात मान 3.771 प्राप्त हुआ जो कि पूर्व निर्धारित स्वतन्त्रांश मान 148 के 0.01 सार्थकता स्तर मान 2.61 तथा 0.05 सार्थता स्तर मान 1.98, से अधिक प्राप्त हुआ है। जिसके आधार पर कल्पित शून्य परिकल्पना निरस्त हो जाती है और स्पष्ट हो जाता है कि स्नातक स्तर पर गणित विषय के चयन में पारिवारिक सम्बन्धों की स्वीकृति एवं अस्वीकृति का प्रभाव सार्थक पाया गया। इसी प्रकार दोनों वर्गों के विषयी चयन के प्रभावों के मध्यमान मानों की तुलना करने पर परिवार द्वारा स्वीकृति प्राप्त विद्यार्थियों का मध्यमान मान, अस्वीकृति प्राप्त विद्यार्थियों के मान से अधिक प्राप्त हुआ। इसका तात्पर्य यह कि विद्यार्थियों के अध्ययन विषयों के चयन में पारिवारिक सम्बन्ध अपना सार्थक प्रभाव रखता है। प्रस्तुत अध्ययन के सदृश अन्य अध्ययनों में भी उपरोक्त अध्ययन के सदृश परिणाम प्राप्त हुए हैं जैसे– सुभाश चन्द्र अग्रवाल ने अपने अध्ययन[5]– ''अनुसूचित, पिछड़ी एवं सामान्य जाति के छात्रों के चुनाव, समायोजन और समस्याओं पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन'' से पाया कि पाठ्यक्रमों में विभिन्न वर्गों के छात्रों में विषयी चुनाव पर पारिवारिक सम्बन्ध सार्थक प्रभाव डालता है।

सारिणी–2

परिवार द्वारा स्वीकृति एवं अस्वीकृति प्राप्त विद्यार्थियों के अध्ययन आदत पर प्रभाव की सार्थकता का अध्ययन

शोध चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचन	मानक त्रुटि	माध्य अन्तर	क्रान्तिक अनुपात मान
पारिवारिक स्वीकृति प्राप्त विद्यार्थी	75	33.39	8.21	1.511	5.1	3.375
पारिवारिक अस्वीकृति प्राप्त विद्यार्थी	75	28.29	10.19			

स्वतन्त्रांश मान = 148 के 0.01 सार्थकता स्तर मान = 2.61 तथा 0.05 सार्थकता स्तर मान = 1.98 पर सार्थक

प्रस्तुत अध्ययन में **सारिणी–2** से अवलोकित होता है कि परिवार द्वारा स्वीकृति प्राप्त एवं अस्वीकृति प्राप्त विद्यार्थियों के अध्ययन आदत पर पड़ने वाले प्रभाव की सार्थकता के अध्ययन में परिवार द्वारा स्वीकृति प्राप्त विद्यार्थियों के अध्ययन आदत का मध्यमान 33.39 तथा मानक विचलन 8.21 प्राप्त हुआ है जबकि परिवार द्वारा अस्वीकृति प्राप्त विद्यार्थियों के अध्ययन आदत का मध्यमान 28.29 तथा मानक विचलन 10. 19 प्राप्त हुआ है। प्राप्तांकों के विश्लेषण से दोनों वर्गों के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत की मानक त्रुटि 4.511 तथा माध्य अन्तर 5.1 प्राप्त हुआ है; जिसके आधार पर क्रान्तिक अनुपात मान 3.375 प्राप्त हुआ जो कि पूर्व निर्धारित स्वतंत्रांश मान 148 के 0.01 सार्थकता मान = 2.61 तथा .05 सार्थकता स्तर मान = 1.98 से अधिक प्राप्त हुई है जिसके आधार पर स्पष्ट हो जाता है कि परिवार द्वारा स्वीकृति एवं अस्वीकृति का विद्यार्थियों के अध्ययन आदत पर प्रभाव सार्थक पाया गया। प्राप्त परिणाम के सदृश पूर्व किये गये शोध कार्यों के परिणाम भी प्राप्त हुए हैं जैसे– लक्ष्मी नारायण पाण्डे[7] ''माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन मूल्यों एवं अध्ययन आदतों पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन'' नामक शीर्षक है, अध्ययन कर पाया कि पारिवारिक सम्बन्ध अध्ययन आदत पर सार्थक एवं धनात्मक प्रभाव डालते हैं।[8–10]

9. **निष्कर्ष एवं सुझाव–** प्रस्तुत अध्ययन में पारिवारिक सम्बन्धों की स्वीकृति और अस्वीकृत विद्यार्थियों के जीवन में सार्थक प्रभाव रखती है। विद्यार्थियों के प्रवेश, विषयों के चयन का, विषयों में अध्ययन आदत आदि सभी कारकों पर पारिवारिक सहयोग व सहमति धनात्मक प्रभाव डालती है जबकि पारिवारिक सम्बन्धों की अस्वीकृति विद्यार्थियों के सभी कार्यों की निष्पत्ति पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार गुण और रीतियाँ और रिवाज का बीजारोपण परिवार की ही पाठशाला में रोपित किये जाते हैं जिसे पोषित कर

विद्यालय आगे बढ़ने का काम करता है। उपरोक्त अध्ययन इस बात पर बल देता है कि यदि बालक पारिवारिक स्वीकृति और सहयोग का आलम्बन विषयों व पाठ्यक्रमों के चयन व भविष्योन्मुख गतिविधियों में लेता है तो परिवार उनके हर एक कदम में साथ देकर सभी समस्याओं का धनात्मक समाधान करने में सहायक होता है। वहीं यदि विद्यार्थी पारिवारिक अस्वीकृति की उपेक्षा कर उपरोक्त क्रिया विधि में संलग्न होता है तो पारिवारिक सहयोग व समर्थन से वंचित होता है और स्वयं ही समस्त समस्याओं के निराकरण हेतु जूझना पड़ता है, और असफलता प्राप्त करने को विवश होना पड़ता है। अतः शिक्षा के सभी स्तरों पर विद्यार्थियों को अपने प्रत्येक कदम में पारिवारिक सम्बन्धों को महत्व प्रदान कर उनकी स्वीकृति व अस्वीकृति पर ध्यानाकृष्ट करना चाहिए, जिससे वे जीवन में प्रत्येक स्तर पर सफलता अर्जित कर सकें।

सन्दर्भ

1. लोक रमन विहारी (2012) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स मेरठ।
2. गुप्ता एस0पी0 एवं गुप्ता अल्का (2018) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन प्रकाशक शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
3. अनीता सी ए0 (1967) मनोवैज्ञानिक परीक्षण, प्रकाशक, मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क, यू0एस0ए0।
4. वर्मन एम0डी0 (1947) मानवीय अभिप्रेरणा, प्रकाशक मैकमिलन कम्पनी, न्युयार्क, यू0एस0ए0।
5. उद्दीन मोंहसिन (2018) मानव समाधान के नये आयाम, प्रकाशन, इथिक पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।
6. सिन्हा डी0 (1961) 'द डेवलपमेन्ट ऑफ टु एंग्जायटी स्केल्स' प्रकाशक एच0पी0 भार्गव, आगरा।
7. परिहार अमरजीत (2014) शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, प्रकाशक भारत लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. अस्थाना, विपिन कु0 निधि एवं विजया श्रीवास्तव (2009) शैक्षिक अनुसन्धान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
9. एन0सी0ई0आर0टी0 सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन (थर्ड) – (1975–1985) पृ0सं0 (135–139)
10. एन0सी0ई0आर0टी0 सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन (फिफ्थ) – (1986–1992) पृ0सं0 (796–813)
11. पाठक, ढोंढियाल एस0(2010) शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।